भारतीय जाति व्यवस्था पर वैश्वीकरण (भूमंडलीकरण) के प्रभावों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रीना आर्य[1], डॉ. तेज बहादुर सिंह[2]

[1]शोध छात्रा, सी.एस.जे.एम यूनिवर्सिटी, कानपुर
[2]पी.पी.एन.कॉलेज, कानपुर

अनुरूपी लेखक: रीना आर्य, शोध छात्रा, सी.एस.जे.एम यूनिवर्सिटी, कानपुर
ईमेल: drreenaarya.kanpur@gmail.com

ABSTRACT

वैश्वीकरण (भूमण्डलीकरण) प्रक्रिया के फलस्वरूप भारतीय सामाजिक संरचना में अनेकों परिवर्तन आए हैं। इसका प्रभाव विवाह, परिवार, नातेदारी, धर्म, शिक्षा तथा जाति पर भी परिलक्षित हैं। साथ ही भारतीय संस्कृति, जीवन–मूल्यों, प्रतिमानों तथा जीवन शैली सभी को प्रभावित किया है। इसलिए ऐसी स्थिति में वस्तुस्थिति व वास्तविकता जानने के लिए ' भारतीय जाति व्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव' प्रस्तुत शोध–अध्ययन एक लघु प्रयास है। तथ्य–संकलन में मुख्य पद्धति के रूप में ''साक्षात्कार–अनुसूची'' तथा ''क्षेत्रीय सर्वेक्षण'' को अपनाया गया है। समग्र के बहुसंख्यक (९२:) सूचनादाताओं ने प्रथम दृष्टया यह स्वीकार किया है कि वैश्वीकरण ने 'जाति व्यवस्था' तथा उसके कुछ पहलुओं को भी प्रभावित कर उसमें अनेक परिवर्तन किए हैं। शोध–अध्येता की मान्यता है कि भारत की वर्तमान की परिस्थितियों में जाति की समाप्ति तथा जातिविहीन समाज की कल्पना करना उचित नहीं है; अर्थात् इसमें हो रहे परिवर्तनों को इसकी समाप्ति का सूचक ;एकपबंजवतद्ध मानना भी उचित नहीं है; अपितु यह एक गत्यात्मक संस्था बन गयी है जो आधुनिकतम संस्थाओं से भी सरलता से अनुकूलन कर रही है। वैश्वीकरण के कारण जाति संस्तरण के साथ–साथ ''वर्ग व्यवस्था'' विकसित हो रही है। लेकिन यह कहना कि भारत में जाति प्रथा समाप्त होती जा रही है; और उसका स्थान 'वर्ग व्यवस्था' लेती जा रही है; कहना अनुचित है।

Key words: जाति व्यवस्था, शोध–अध्ययन, वैश्वीकरण, भारतीय समाज

भूमिका

पूर्व अध्येताओं की मान्यता है कि वैश्वीकरण (भूमण्डलीकरण) प्रक्रिया के फलस्वरूप भारतीय सामाजिक संरचना में अनेकों परिवर्तन आए हैं। इसका प्रभाव विवाह, परिवार, नातेदारी, धर्म, शिक्षा तथा जाति पर भी परिलक्षित हैं। साथ ही भारतीय संस्कृति, जीवन–मूल्यों, प्रतिमानों तथा जीवन शैली सभी को प्रभावित किया है। अनेक आनुभविक अध्ययन यह प्रदर्शित करते हैं कि वैश्वीकरण; अविकसित तथा विकासशील देशों की आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक एवं राजनीतिक संस्थाओं के लिए एक गम्भीर खतरा व चुनौती है।

अध्ययन–समस्या

प्रस्तावित अध्ययन की समस्या 'वैश्वीकरण का सामाजिक प्रभाव' हैं। इस विषय के गहन विश्लेषण हेतु विभिन्न आयामों के परिप्रेक्ष्य में उभरती हुई समस्याओं की चर्चा की गयी है, जो निम्नवत् है :

(१) क्या वैश्वीकरण की प्रक्रिया परम्परागत जाति व्यवस्था को प्रभावित कर रही है?
(२) वैश्वीकरण की प्रक्रिया किस प्रकार से जाति व्यवस्था को प्रभावित कर रही है?

अध्ययन का उद्देश्य

(१) जाति व्यवस्था पर वैश्वीकरण (भूमण्डलीकरण) के प्रभावों का अध्ययन करना।

Quick Response Code:

www.oijms.org.in

इसलिए ऐसी स्थिति में वस्तुस्थिति व वास्तविकता जानने के लिए ' भारतीय जाति व्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव' प्रस्तुत शोध–अध्ययन एक लघु प्रयास है।

अध्ययन–क्षेत्र

'अध्ययन–क्षेत्र' रूप में उत्तर प्रदेश का जनपद औरैया 'समग्र' चुना गया है जो शोध की दृष्टि से न अधिक विस्तृत है, और न अधिक सीमित; अपितु उचित तथा उपयुक्त है। यह एक नवसृजित जनपद है; जिसमें कुल तीन तहसीलें (औरैया, बिधूना तथा अजीतमल) और सात विकासखण्ड (सहार, बिधूना, अजीतमल, भाग्यनगर, अछल्दा, औरैया तथा एरबाकटरा) हैं। जनपद की कुल जनसंख्या (वर्ष २०११ के अनुसार) १३,७९,५४५ (७४००४० पुरूष, ६३९५०५ महिलाएं) हैं जिसमें नगरीय जनसंख्या २,३४,२०५, शेष ग्रामीण है। सात विकासखण्डों में से तीन विकासखण्ड (भाग्यनगर, सहार, अच्छल्दा) ''संयोग निदर्शन की लाटरी विधि'' से चुनकर; प्रत्येक विकासखण्ड से २–२ ग्राम पंचायतें अर्थात् कुल ६ ग्राम पंचायतें चुनकर; चयनित ग्राम पंचयतों के कुल ५९९६ परिवारों में से ५: निदर्श–चयन के अनुसार २९९.८ अर्थात् ३०० परिवार चुनकर; इन परिवारों के कर्ताओं/मुखियाओं को अध्ययन की इकाई (सूचनादाता) मानकर प्राथमिक तथ्य संकलित किए गए हैं। इस प्रकार यह किया गया अध्ययन प्रकृति की दृष्टि से ''सूक्ष्म आनुभविक समाजशास्त्रीय'' है।

पद्धति शास्त्र

तथ्य–संकलन में मुख्य पद्धति के रूप में ''साक्षात्कार–अनुसूची'' तथा ''क्षेत्रीय सर्वेक्षण'' को अपनाया गया है। प्राथमिक तथ्य संकलित करने से पूर्व अनुसूची की वैधता तथा सार्थकता की जाँच 'पायलट सर्वे' द्वारा की गयी तत्पश्चात् 'व्यक्तिगत साक्षात्कार' तथा 'अवलोकन' करते हुए प्राथमिक तथ्य प्रचुर व समुचित मात्रा में संकलित किए गए हैं। तदुपरान्त साँख्यकीय विधि से तथ्यों का वर्गीकरण एवं साँख्यकीय विश्लेषण कर तत्सम्बन्धित निष्कर्ष स्थापित किए गए हैं। अध्ययन को तार्किक रूप देने के लिए शोध–परिकल्पनाओं की सत्यता तथा सार्थकता के परीक्षण भी किए गए हैं

परिणाम

प्रस्तुत तालिका १ से सुस्पष्ट है कि समग्र के बहुसंख्यक (९२:) सूचनादाताओं ने प्रथम दृष्टया यह स्वीकार किया है कि वैश्वीकरण ने 'जाति व्यवस्था' तथा उसके कुछ पहलुओं को भी प्रभावित कर उसमें अनेक परिवर्तन किए हैं जिस पर अग्राँकित तालिका सूचनादाताओं की आवृति (:) सापेक्ष संक्षिप्त प्रकाश डालती है

तलिका नं. १ : वैश्वीकरण ने 'जाति प्रथा' को प्रभावित किया है, अथवा नहीं?– के प्रति सूचनादाताओं के अभिमत

क्रम	क्या **वैश्वीकरण** ने जाति प्रथा को प्रभावित किया है?	समस्त	**प्रतिशत**
१	''हाँ''	२७६	९२.००
२	''नहीं''	—	००.००
३	तटस्थ दृश्टिकोण	१८	०६.००
४	'कह नहीं सकते'	६	०२.००
	समस्त	३००	१००.००

प्रस्तुत तालिका नं० २ के ''हाँ'' स्तम्भ की आवृत्तियों तथा प्रतिशतताओं के प्रकाश में स्पष्ट है कि जाति व्यवस्था तथा उसके विभिन्न पहलुओं पर वैश्वीकरण प्रक्रिया के विभिन्न प्रभाव भाँति–भाँति से पड़ रहे हैं जो उक्त तालिका में निर्दिष्ट हैं।

तालिका नं. २ : 'जाति व्यवस्था' तथा इसके विभिन्न पहलुओं पर वैश्वीकरण प्रक्रिया के प्रभाव– सूचनादाताओं की स्वीकारोक्तियाँ/अभिमत

क्रम	जाति व्यवस्था तथा उसके विभिन्न पहलुओं पर वैश्वीकरण प्रक्रिया के प्रभाव	सूचनादाताओं के अभिमत (आवृत्तियाँ/ प्रतिशत)				समस्त प्रतिशत
		हाँ	नहीं	तटस्थ	कह नहीं सकते	
१	जातिवादी रूढ़िवादिता में गिरावट आयी है	१९८(६६.००)	—	४८(१६.००)	५४(१८.००)	३००(१००.००)
२	जाति की मान्यताओं, संरचना व प्रकार्यों में बदलाव आ रहा है	२०७(६९.००)	—	१८(०६.००)	७५(२५.००)	३००(१००.००)
३	अस्पृष्यता का अन्य हो रहा है	१९२(६४.००)	१५(०५.००)	८१(२७.००)	१२(०४.००)	३००(१००.००)
४	जातीय विभेद तीव्रगति से समाप्त हो रहे हैं	१८१(६०.३३)	६०(२०.००)	३३(११.००)	२६(०८.६७)	३००(१००.००)
५	सामाजिक सम्बन्धों के नियम उदार व षिथिल हुए हैं	१७९(५९.६७)	—	८५(२८.३३)	३६(१२.००)	३००(१००.००)
६	दलित, षोशित तथा वंचित वर्गों में परिजीविता भावना का अन्त हुआ है	१९५(६५.००)	४२(१४.००)	४८(१६.००)	१५(०५.००)	३००(१००.००)
७	जाति; वर्ग में बदल रही है	२२८(७६.००)	—	—	७२(२४.००)	३००(१००.००)
८	अस्पृष्य जातियों की स्थिति व जीवन षैली परिवर्तित हो रही है	१८०(६०.००)	—	२७(०९.००)	९३(३१.००)	३००(१००.००)
९	जातीय निशेधों में बदलाव आया है	१९५(६५.००)	६३(२१.००)	४२(१४.००)	—	३००(१००.००)
१०	जाति संस्तरण में परिवर्तन हो रहा है	२४०(८०.	—	१८(०६.	४२(१४.	३००(१००.

		००)		००)	००)	००)
११	जातिगत व्यवसाय–मनोवृत्तियों में परिवर्तन आया है	१८३(६१.००)	—	५८(१९.३३)	५९(१९.६७)	३००(१००.००)
१२	जातीय चेतना व संगठनों में वृद्धि हुई है	२३७(७९.००)	—	६३(२१.००)	—	३००(१००.००)
१३	अन्तर्जातीय सम्बन्धों का विकास हुआ है	२२५(७५.००)	—	७५(२५.००)	—	३००(१००.००)
१४	जातियों के अर्न्तसम्बन्धों की प्रकृति सहकारी, प्रतिस्पर्धात्मक तथा संघर्शात्मक बनी हुई है लेकिन आधुनिक परिवर्तनों के साथ सामंजस्य कर रही हैं	२१०(७०.००)	१५(०५.००)	६५(२१.६७)	१०(०३.३३)	३००(१००.००)
१५	जाति तथा व्यवसाय का सम्बन्ध टूट गया है अत: व्यावसायिक गतिषीलता में वृद्धि हो रही है	२४३(८१.००)	—	४४(१४.६७)	१३(०४.३३)	३००(१००.००)
१६	सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था आज भी कहीं न कहीं 'जाति' के इर्द–गिर्द संचालित हो रही है	२५५(८५.००)	—	४५(१५.००)	—	३००(१००.००)
१७	जाति व्यवस्था में हो रहे परिवर्तन; ऊर्ध्वगामी तथा अधोगामी दोनों ही दिषा की ओर उन्मुख हो रहे हैं	२०४(६८.००)	—	९६(३२.००)	—	३००(१००.००)
१८	जाति व्यवस्था में परिवर्तनों के लिए औद्योगीकरण, नगरीकरण, पष्चिमीकरण, संस्कृतिकरण, षिक्षा, वैज्ञानिक प्रगति, आधुनिक अधिनियम, संचार क्राँति तथा वैष्विक कारक उत्तरदायी हैं	२४६(८२.००)	—	४३(१४.३३)	११(०३.६७)	३००(१००.००)

इस सन्दर्भ में शोध–अध्येता की मान्यता है कि भारत की वर्तमान की परिस्थितियों में जाति की समाप्ति तथा जातिविहीन समाज की कल्पना करना उचित नहीं है; अर्थात् इसमें हो रहे परिवर्तनों को इसकी समाप्ति का सूचक ;प्दकपबंजवतद्ध मानना भी उचित नहीं है; अपितु यह एक गत्यात्मक संस्था बन गयी है जो आधुनिकतम संस्थाओं से भी सरलता से अनुकूलन कर रही है।

निष्कर्ष

भारतीय जाति व्यवस्था, वैश्वीकरण–प्रक्रिया के प्रभावस्वरूप तीव्रगति से प्रभावित हो रही है, और वैश्विक संस्कृति/ अमेरिकीकरण का रूप ले रही है जिसे मैक्डोनाल्डीकरण कह सकते हैं। वैश्वीकरण के कारण जाति संस्तरण के साथ–साथ ''वर्ग व्यवस्था'' विकसित हो रही है। लेकिन यह कहना कि भारत में जाति प्रथा समाप्त होती जा रही है; और उसका स्थान 'वर्ग व्यवस्था' लेती जा रही है; कहना अनुचित है।

संदर्भ

1. म्हाजन संजीव ; भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण, प्रकाषित षोध पत्र, इण्टर नेानल जर्नल ऑफ इकॉनोमिक्स, नई दिल्ली, वाल्यूम ४०, २०११, पृश्ठ ११०–११५
2. मदानजी. आर.; सामाजिक परिवर्तन एवं विकास : वैष्वीकरण के सन्दर्भ में, पूर्वोक्त, पृ.४३
3. पाण्डेय षैलजा ; उदारवाद के परिवर्तनों से भारतीय समाज में उपजाविवाह का त्रिषंकुस्वरूप:

''लिव–इन–रिलेषनषिप'', प्रकाषित षोध लेख, ४३वॉ अखिल भारतीय समाजषास्त्रीय सम्मेलन, लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ ९–१२ नवम्बर २०१७, पृश्ठ ५५

4. श्रीवास्तव सुनीता; षहरी क्षेत्रों में वैवाहिक सम्बन्धों का बदलता स्वरूप, पूर्वोक्त, लखनऊ, ९–१२ नवम्बर २०१७, पृश्ठ ५८
5. मिश्रा एस.के. ; ''वैष्वीकरण एवं घरेलूहिंसा'' राश्ट्रीय षोध पत्रिका ''सामाजिक सरोकार'' औरंगाबाद (महाराश्ट्र), प्रकाषित षोध पत्र, वॉल्यूम–३०, २०१५, पृश्ठ ३०–३६
6. गुप्ता घनष्याम : वैष्वीकरण के सन्दर्भ में सामाजिक– साँस्कृतिक परिवर्तन; इण्टरनेानल जर्नल ऑफ साइन्स एण्ड कल्चर, बोरीवली, बॉम्बे, इण्डिया २००५, पृश्ठ ५४–६०
7. अर्चलेषकुमार ; वैष्वीकरण: साँस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया: एक चुनौती, प्रकाषित षोध आलेख, ''सामाजिक सहयोग'' उज्जैन (म.प्र.), जुलाई–सितम्बर अंक २००९, पृश्ठ ६१–६७